भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी

विजय वल्लभ स्मारक जैन मंदिर, जी.टी. करनाल रोड,
पोस्ट अलीपुर, दिल्ली 110036

<u>उमास्वाति कृत तत्त्वार्थसूत्र पर राष्ट्रीय कार्यशाला</u>

(रविवार 05 फरवरी से बुद्धवार 15 फरवरी 2017 तक)

सहर्ष सूचनीय है कि **भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्** एवं भोगीलाल लहेरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में **'उमास्वाति कृत तत्त्वार्थसूत्र'** विषयक ग्यारह दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है जो **05 फरवरी 2017 से आरम्भ होकर 15 फरवरी, 2017** तक सम्पन्न होगी। इस कार्यशाला में जिज्ञासु प्रतिभागियों को तत्त्वार्थसूत्र का अध्ययन कराया जायगा। तत्त्वार्थसूत्र सूत्रशैली में जैन परम्परा की प्रथम संस्कृत रचना है। इसके माध्यम से जैन तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, आचारमीमांसा, जैन लोक, मोक्ष आदि का अध्ययन कराया जायेगा। साथ ही तद्विषयक साहित्य पर कुछ विशिष्ट व्याख्यान भी आयोजित किये जायेगें। कार्यशाला में भाग लेने के लिये जैन दर्शन, दर्शन, प्राकृत, संस्कृत एवं इतिहास में कम से कम परास्नातक योग्यता (एम. ए. या आचार्य) अपेक्षित है। जो व्यक्ति जैन विद्या से सम्बन्धित विषयों पर पी-एच. डी./पी.डी.एफ. उपाधि हेतु कार्य कर रहे हैं या जैन शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी। कार्यशाला का माध्यम सामान्यत: हिन्दी भाषा रहेगी।

जैन शिक्षण संस्थाओं में कार्य कर रहे एवं जैन विद्या के क्षेत्र में कार्यरत तथा जैन विद्या का ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक प्रतिभागियों के लिए यह कार्यशाला अन्यन्त उपयोगी रहेगी। कार्यशाला नि:शुल्क है एवं पूर्णत: आवासीय है। प्रतिभागियों के लिये आवास, भोजन आदि की पूर्ण व्यवस्था रहेगी। प्रतिभागियों को तृतीय श्रेणी वातानुकूलित रेल यात्रा-व्यय दिया जायगा। कार्यशाला में भाग लेने के इच्छुक प्रत्याशी कृपया अपनी योग्यता आदि का विवरण देते हुए संस्थान से शीघ्र संपर्क करें।

आवदेन पत्र ***http://blinstitute.org*** संज्ञक वैबसाइट पर उपलब्ध है। **आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2016 है।** (The last date for submission of the application is 31st December 2016.) आवेदन इमेल द्वारा भी किया जा सकता है।

प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, निदेशक
फोन : 011-27202065, 27206630
director@blinstitute.org;
blinstitute1984@gmail.com

◆ ◆ ◆

Bhogilal Leherchand Institute of Indology

Vijay Vallab Smarak Jain Mandir, G.T.K. Road, Post Alipur, Delhi 110036

Ph. : 011-27202065, 2720330; info@blinstitute.org

APPLICATION FORM

Workshop on Tattvarthasutra of Umasvati

05TH FEBRUARY TO 15TH FEBRUARY, 2017

Paste your passport size photograph

1. **Name of the applicant :** ....

2. **Date of Birth:** ....

3. **Educational Qualifications:**

Name of the Examination	*Name of University and Year*	*Division & % of marks*	*Subjects/ specialisation*
B.A			
M.A.			
Ph.D			

4. **Present Engagement / Occupation** : ....

5. **Full Postal Address** : ....

....

....

6. **E-mail ID.** : ....

7. **Phone or Mobile No.** : ....

8. **Have you ever attended any of the workshop conducted by this Institute? Mention the year of participation and details:** ....

9. **Title of the thesis if pursuing Research work or have finished it:** ....

....

10. **Recommendation of the HoD/Research Guide, or Head of the Institution if serving somewhere.** ....

....

Place:

Date: Signature of the Candidate

Attention:

1. Please fill in this application form legibly. Incomplete applications are liable to be rejected.
2. Paste one Passport size photograph on the space given on the application form and also attach an additional photo for identity card with your application.
3. Attach photocopies of yours Master's /Doctorate certificates.

उमास्वाति कृत तत्त्वार्थसूत्र पर राष्ट्रीय कार्यशाला

वाचक उमास्वाति या उमास्वामि (तृतीय-चतुर्थ शती ई.) का तत्त्वार्थसूत्र या तत्त्वार्थाधिगमसूत्र या मोक्षशास्त्र जैन परम्परा में आगम साहित्य के पश्चात् सर्वाधिक समादृत संस्कृत भाषा में संक्षिप्तसूत्र शैली में रचित प्रथम ग्रन्थ है। इसके पूर्व जैन आगमों एवं आगम मान्य ग्रन्थों की भाषा अर्द्धमागधी एवं शौरसेनी प्राकृत, रचनाशैली प्राय: गाथा आधारित, लम्बे एवं वर्णनात्मक सूत्रों वाली थी। दस अध्यायों में 344 सूत्रों में निबद्ध यह ग्रन्थ सभी जैन सम्प्रदायों में मान्य है। इसके अतिरिक्त इनके द्वारा रचित तत्त्वार्थभाष्य और प्रशमरतिप्रकरण उपलब्ध है। भाष्य की प्रशस्ति के अनुसार ये उच्चैर्नागर शाखा के थे एवं कुसुमपुर नामक स्थान में इसकी रचना किये थे। दिगम्बर परम्परा इन्हें कुन्दकुन्द की परम्परा का मानती है। इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विशेष प्रकाश नहीं पड़ता है।

जिन या सर्वज्ञ भाषित में श्रद्धा रखकर उसके मार्ग का अनुसरण कर मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होना जैन परम्परा का लक्ष्य है। परिणामत: उमास्वाति ने आगमों के विशाल गहन गम्भीर तत्त्वज्ञान को अत्यन्त संक्षेप में सूत्रबद्ध किया जो उनकी अनुपम प्रतिभा का परिचायक है। वस्तुत: तत्त्वार्थसूत्र आगमों की कुंजी है। श्वेताम्बर एवं दिगम्बर परम्परा के कई प्रमुख आचार्यों द्वारा तत्त्वार्थ की व्याख्या करना इसके महत्त्व का प्रमाण है।

तत्त्वार्थसूत्र की विषय वस्तु को तत्कालीन दार्शनिक पृष्ठभूमि में समझा जासकता है। मोक्ष भारतीय दर्शन का केन्द्र बिन्दु है और विश्वचिन्तन को सर्वाधिक मौलिक योगदानों में से एक है। मोक्ष अर्थात् दु:खमय भव-भ्रमण रूपी सांसारिक बन्धन से मुक्त होकर शाश्वत सुख को प्राप्त करना जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। अत: आत्मा, जगत्, बन्धन, बन्धन के कारण, बन्धन-मुक्ति के साधन-आचार मीमांसा, तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा का विवेचन प्राय: सभी भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों का प्रमुख प्रतिपाद्य रहा है।

वैशेषिक, सांख्य और वेदान्तदर्शन में विषय का वर्णन ज्ञेय-मीमांसा-प्रधान है। वैशेषिकदर्शन जगत् का निरूपण करते हुए मूल द्रव्य संख्या, स्वरूप, अवान्तर पदार्थ संख्या एवं स्वरूप इत्यादि का वर्णन करके मुख्य रूप से जगत् के प्रमेयों की ही मीमांसा करता है। सांख्यदर्शन प्रकृति और पुरुष का निरूपण कर प्रधान रूप से जगत् के मूलभूत प्रमेय तत्त्वों की ही मीमांसा करता है। वेदान्तदर्शन भी मुख्यत: जगत् के मूलभूत ब्रह्मतत्त्व की ही मीमांसा करता है। योग और बौद्ध-दर्शन में चारित्र की मीमांसा मुख्य है। जीवन की शुद्धि का स्वरूप, वह कैसे साध्य है, उसमें कौन-कौन बाधक हैं इत्यादि जीवन-सम्बन्धी प्रश्नों का हल योगदर्शन ने हेय (दु:ख), हेयहेतु (दु:ख का कारण), हान (मोक्ष) और हानोपाय (मोक्ष का कारण) इस चतुर्व्यूह का प्रतिपादन किया हो तो और बौद्ध-दर्शन ने चार आर्यसत्यों का निरूपण किया है।

जैन परम्परा ने जीव-आत्मा और अजीव पुद्‌गल के मध्य अनादि संयोग को सांसारिक जीवन का आधार स्वीकार किया है। जीव को वाणी, श्वास या विचार की क्षमता द्रव्य के संयोग से प्राप्त होती है। लेकिन जीव के अभाव में इन प्रवृत्तियों के सम्पादक अंग-उपांग निर्जीव बन जाते हैं। साथ ही कर्म रूप कारण- कार्य सिद्धान्त के कारण विश्व संचालित होता है। जैन परम्परा ने अपनी मीमांसा में ज्ञेयतत्त्व और चारित्र को समान स्थान दिया है। इस कारण इनकी तत्त्वमीमांसा एक ओर जीव-अजीव के निरूपण द्वारा जगत् के स्वरूप का वर्णन करती है तो दूसरी ओर आस्रव, संवर आदि तत्त्वों का वर्णन करके चारित्र का स्वरूप दिखाती है। यहाँ तत्त्वमीमांसा का अर्थ है ज्ञेय और चारित्र का समान रूप से विचार। इस मीमांसा में नौ या सात तत्त्वों के प्रति अचल श्रद्धा को जैनतत्व का अपरिहार्य अंग मानकर उसका वर्णन किया गया है।

इस वस्तुस्थिति के कारण ही वा. उमास्वाति ने अपने प्रस्तुत शास्त्र के विषय के रूप में इन नौ या सात तत्त्वों का प्रतिपादन 'तत्त्वार्थाधिगम' में किया। उमास्वाति ने अपने समय में विशेष चर्चा प्राप्त प्रमाण-मीमांसा के निरूपण की उपयोगिता अनुभव की। उन्होंने तत्त्वों के अतिरिक्त ज्ञान-मीमांसा को विषय के रूप में स्वीकार करके तथा न्यायदर्शन की प्रमाणमीमांसा के स्थान पर जैन ज्ञानमीमांसा प्ररूपण की अपने सूत्रों में योजना की। इस

प्रकार उमास्वाति ने अपने सूत्र के प्रतिपाद्य के रूप में ज्ञान, ज्ञेय और चारित्र इन तीनों मीमांसाओं को जैन दृष्टि के अनुसार अपनाया है।

इस आलोक में उमास्वाति ने ग्रन्थ का प्रारम्भ जीवन के परम लक्ष्य मोक्षमार्ग का स्वरूप प्रतिपादन करते हुये सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को मोक्ष मार्ग कहा है। सम्यग्दर्शन अर्थात् जीव, अजीव-पुदगल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल-, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष रूप सात तत्त्वों में श्रद्धा रूप है। इन सात तत्त्वों का प्रतिपादन इसमें व्यवस्थित रूप से हुआ है। तत्त्वों के समग्र ज्ञान के साधन के रूप में पंच ज्ञान और आंशिक ज्ञान के साधन के रूप में नय का विवेचन है।

आत्मा अपने स्वरूप में अनन्तचतुष्टय- अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त चारित्र और अनन्त वीर्य से युक्त ही आत्मा का यह स्वरूप कर्मों के साथ बन्धन के कारण आवृत हो जाता है। उस कर्म रूपी मल को दूर कर पुनः स्वभाव को प्राप्त करना परम लक्ष्य है। कर्म- बन्धन के कारणों मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग का प्रतिपादन है।

श्रमण चारित्र से सम्बद्ध पंचमहाव्रत, दसधर्म, षडावश्यक, बारह भावना, पंचसमिति, तीन गुप्ति, बाईस परिषह, बारह तप का विवेचन है। साथ ही श्रावक के अणुव्रत आदि बारह व्रतों का प्रतिपादन है। लोक के स्वरूप के क्रम में जैन लोक-नरक लोक, - मनुष्य क्षेत्र, देव लोक - चतुर्विध देव निकाय, देव कल्प, देवों एवं असुरों की स्थिति- काल आदि का निरूपण है।

अन्त में मोक्ष का स्वरूप, सिध्यमान गति के हेतु, सिद्धगति की बारह विशेषताएँ बन्ध के कारण और कैवल्य-उत्पत्ति के हेतु पर विचार के साथ ग्रन्थ का समापन किया गया है।

विशिष्ट व्याख्यान -

ग्रन्थ के उपर्युक्त मुख्य प्रतिपाद्य के अध्ययन के साथ ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार से सम्बन्धित आवश्यक परिचय भी कराया जायेगा। इसमें तत्त्वार्थसूत्र का महत्त्व, उमास्वाति-जीवन परिचय, गुरु, काल, कृतित्व, श्वेताम्बर एवं दिगम्बर संस्करण की मुख्य विशेषतायें, तत्त्वार्थसूत्र का प्रतिपाद्य, तत्त्वार्थसूत्र का व्याख्या साहित्य - तत्त्वार्थसूत्र के प्रकाशित संस्करण एवं उनकी विशेषताएँ, आधुनिक देशी और विदेशी भाषाओं में अनुवाद एवं व्याख्या साहित्य - तत्त्वार्थसूत्र एवं व्याख्या साहित्य पर शोध आदि।

इसके अतिरिक्त त्रिविध एवं चतुर्विध मोक्षमार्ग, सात एवं नौ तत्त्व परम्परा, परस्परोपग्रहो जीवानाम् का सिद्धान्त, आत्म-अस्तित्व का प्रमाण, जगत्वैचित्र्य के कारण और कर्म सिद्धान्त, जैन लोक स्वत: उत्पन्न या सृष्ट पर विशिष्ट व्याख्यानों के माध्यम से परिचय कराया जायेगा।

इस प्रकार तत्त्वार्थसूत्र आधारित इस कार्यशाला में जैन दर्शन, आचार, लोक एवं तद्विषयक समस्याओं का भलीभांति अध्ययन कराया जायगा और साथ ही जैन आगम साहित्य, जैन दार्शनिक, कर्म सिद्धान्त, जैन श्रमणाचार, जैन श्रावकाचार जैन ध्यान एवं योग विषयक साहित्य का भी ज्ञान कराया जायगा। इस प्रकार यह कार्यशाला जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन के क्षेत्र में कार्य करने वाले अध्येताओं के साथ-साथ जैन विद्या का ज्ञान प्राप्त कने के इच्छुक लोगों के लिए भी उपयोगी होगी।

प्रो. अशोक कुमार सिंह
बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी,
दिल्ली